
krishnashtakam by Vishnutirtha

श्रीविष्णुतीर्थविरचितं श्रीकृष्णाष्टकम्

Document Information

Text title : Krishnashtam 10 by viShNutIrtha

File name : kRRiShNASHTakamviShNutIrtha.itx

Category : vishhnu, aShTaka, krishna

Location : doc_vishhnu

Author : Vishnutirtha

Transliterated by : Srividya Guruprasad

Proofread by : Srividya Guruprasad

Description/comments : Suggested to read/remember at the time of death (antyakAle smaraNe)

Latest update : December 30, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 7, 2022

sanskritdocuments.org

श्रीविष्णुतीर्थविरचितं श्रीकृष्णाष्टकम्



श्री वासुदेव मधुसूदन कैटभारे
लक्ष्मीश पक्षिवर वाहन वामनेति ।
श्रीकृष्ण मन्मरण उपागते तु
त्वन्नाम मद्बचन गोचरतामुपैतु ॥ १ ॥

गोविन्द गोकुलपते नवनीत चोर
श्री नन्दनन्दन मुकुन्द दयापरेति ।
श्रीकृष्ण मन्मरण उपागते तु
त्वन्नाम मद्बचन गोचरतामुपैतु ॥ २ ॥



नाराणाखिल गुणार्णव वेद
पारायण प्रिय गजाधिप मोचकेति ।
श्रीकृष्ण मन्मरण उपागते तु
त्वन्नाम मद्बचन गोचरतामुपैतु ॥ ३ ॥

आनन्द सच्चिदाखिलात्मक भक्त वर्ग
स्वानन्द दान चतुरागम सद्भुतेति ।
श्रीकृष्ण मन्मरण उपागते तु
त्वन्नाम मद्बचन गोचरतामुपैतु ॥ ४ ॥

श्री प्राणतोऽधिक सुख्यातक रूप देव
प्रोद्यद्दिवाकर निभाच्युत सद्गुणेति ।
श्रीकृष्ण मन्मरण उपागते तु
त्वन्नाम मद्बचन गोचरतामुपैतु ॥ ५ ॥

विश्वान्धकारि मुख दैवत वन्द्य शाश्वत्
विश्वोद्भवस्थितिमृति प्रभृति प्रदेति ।
श्रीकृष्ण मन्मरण उपागते तु
त्वन्नाम मद्बचन गोचरतामुपैतु ॥ ६ ॥

नित्तैक रूप दश रूप सहस्र लक्षा
नन्त रूप शत रूप विरूपकेति ।
श्रीकृष्ण मन्मरण उपागते तु
त्वन्नाम मद्वचन गोचरतामुपैतु ॥ ७ ॥
सर्वेश सर्वगत सर्व शुभानुरूप
सर्वान्तरात्मक सदोदित सत्प्रियेति ।
श्रीकृष्ण मन्मरण उपागते तु
त्वन्नाम मद्वचन गोचरतामुपैतु ॥ ८ ॥
इति श्रीविष्णुतीर्थविरचितं श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ।

——
krishnashtakam by Vishnutirtha
pdf was typeset on January 7, 2022
——

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

